• मान्यता...

रुद्राक्ष

हिंदू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। इसलिए इसे इतना खास माना जाता है। रुद्राक्ष के भी कई प्रकार होते हैं। ऐसे में आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि आपको कौन-सा रुद्राक्ष धारण करने से सबसे अधिक लाभ मिल सकता है। 14 तरह के रुद्राक्ष होते हैं, जिसमें से एक मुखी रुद्राक्ष को भगवान शिव का स्वरूप माना जाता है। इसलिए यह रुद्राक्ष सबसे शक्तिशाली और दुर्लभ माना गया है। रुद्राक्ष पहनने का पूरा लाभ तभी मिलता है, जब इससे संबंधित नियमों का ध्यान रखा जाए। रुद्राक्ष धारण करने से पहले किसी अच्छे ज्योतिषी से सलाह जरूर ले लेनी चाहिए। रात को सोने से पहले और शमशान घाट या किसी मृत्यु वाली जगह पर जाने से पहले रुद्राक्ष निकाल देना चाहिए। रुद्राक्ष पहनने वाले व्यक्ति को मांस-मदिरा का सेवन भी नहीं करना चाहिए, वरना आपको इसके शुभ परिणाम नहीं मिलते। इसी के साथ इस रुद्राक्ष को धारण करने के लिए अमावस्या, पूर्णिमा, सावन महीने का सोमवार या फिर शिवरात्रि का दिन सबसे उत्तम माना गया है। रुद्राक्ष को पहनने के बहुत से नियम ज्योतिष शास्त्र में बताए गए हैं, जिन्हें नजरअंदाज करने पर इसका फल नहीं मिलता है।

- **रुद्राक्ष पहनने के फायदे**-धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, रुद्राक्ष पहनने से मन शांत रहता है, तनाव कम होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। साथ ही, रुद्राक्ष पहनने से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है, शरीर ऊर्जावान बना रहता है और भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है. इसके अलावा, रुद्राक्ष पहनने से हृदय संबंधी समस्याएं, शुगर और बीपी जैसी बीमारियों से भी राहत मिल सकती है।
- रुद्राक्ष पहनने के बाद के नियम रात को सोने से पहले रुद्राक्ष उतार देना चाहिए, क्योंकि सोते समय शरीर को अशुद्ध माना जाता है।
- बाथरूम या टॉयलेट में जाते समय भी रुद्राक्ष पहनकर न जाएं, बल्कि बाहर ही उतार दें।
- महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान रुद्राक्ष नहीं पहनना चाहिए।
- किसी बच्चे के जन्म पर सूतक लगता है, ऐसे में उस घर में रुद्राक्ष पहनकर न जाएं।
- रुद्राक्ष पहनकर मांस-मदिरा का सेवन न करें और ऐसी जगहों पर भी न जाएं जहां इन चीजों का सेवन होता हो।
- रुद्राक्ष को गंदे हाथों से न छुएं और स्नान करने के बाद ही इसे दोबारा धारण करें।
- अपना रुद्राक्ष किसी और को न दें और न ही किसी और का रुद्राक्ष पहनना चाहिए।
- किसी की मृत्यु होने पर शोक सभा में जाने से पहले रुद्राक्ष उतार कर घर पर रख देना चाहिए।

• व्रत...

मोक्षदा एकादशी

हर माह में दो एकादशी के व्रत पड़ते हैं। एकादशी जगत के पालनहार भगवान श्री हरि विष्णु को समर्पित की गई है। मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी मोक्षदा एकादशी कहलाती है। इसी दिन कुरुक्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था, इसलिए इस दिन को गीता जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन विधि-विधान से जगत के पालनहार भगवान श्री हरि विष्णु का पूजन किया जाता है। साथ ही व्रत रखा जाता है। मान्यता है कि इस दिन व्रत और पूजन करने से जीवन के सभी संकट दूर होते हैं। सुख-समृद्धि का वास बना रहता है। सबसे महत्वपूर्ण ये है कि मोक्षदा एकादशी का व्रत करने वाले मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त करते हैं, लेकिन इस व्रत के नियम कठिन हैं। ऐसे में आइए जानते हैं कि मोक्षदा एकादशी के दिन क्या खाना और क्या नहीं खाना चाहिए?

- **मोक्षदा एकादशी कब है**-वैदिक पंचांग के अनुसार, इस साल मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि की शुरुआत 30 नवंबर को रात 9 बजकर 29 मिनट पर होगी। वहीं इस तिथि का समापन अगले दिन 01 दिसंबर को सुबह 07 बजकर 01 मिनट पर होगा। ऐसे में उदयातिथि के अनुसार, इस साल मोक्षदा एकादशी 01 दिसंबर को मनाई जाएगी. इसी दिन इसका व्रत भी रखा जाएगा।
- **व्रत के दौरान क्या खाएं**-मोक्षदा एकादशी के दिन केला, सेब, संतरा, अंगूर आदि खाया जा सकता है। दूध, दही, पनीर, छाछ का सेवन किया जा सकता है। आलू, शकरकंद, अरबी, सिंघाड़े के आटे से बनी चीजों का सेवन किया जा सकता है। कुट्टू का आटा, सिंघाड़े का आटा, साबूदाना, राजगिरा का उपयोग किया जा सकता है। टमाटर, गाजर, लौकी, ककड़ी आदि खाई जा सकती है। सेंधा नमक, काली मिर्च, अदरक, हरी मिर्च खा सकते हैं।
- **व्रत के दौरान क्या न खाएं**-चावल, गेहूं, दालें और सामान्य नमक का सेवन नहीं करना चाहिए। लहसुन, प्याज, मांस, मदिरा और अन्य तामसिक भोजन से बचना चाहिए। हल्दी, हींग, राई, मेथी दाना आदि मसालों का उपयोग नहीं करना चाहिए। एकादशी के दिन बासी खाना या दोबारा गरम किया गया खाना नहीं खाना चाहिए। एक ही दिन में दो बार भोजन नहीं करना चाहिए।
- **मोक्षदा एकादशी व्रत के सही नियम**-एकादशी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें। भगवान विष्णु और श्री कृष्ण की पूजा करके व्रत का संकल्प लें। 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का 108 बार जप करें। इस दिन गीता जयंती भी है, इसलिए श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ जरूर करें। रात में जागकर भजन-कीर्तन करें। द्वादशी तिथि के दिन सूर्योदय के बाद ही व्रत का पारण करें। पारण के पहले ब्राह्मण या किसी जरूरतमंद को भोजन कराकर दान दें।

बांके बिहारी मंदिर कई चमत्कारों से भरा हुआ है और शायद इसी वजह से देश-विदेश से लोग यहां दर्शन करते आते हैं। बांके बिहारी मंदिर में जो भगवान कृष्ण की मूर्ति विराजमान हैं, वह बेहद चमत्कारी मानी गई है।

बांके बिहारी मंदिर में विराजमान बांके बिहारी जी की मूर्ति भगवान कृष्ण का एक रूप है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, यह मूर्ति स्वामी हरिदास द्वारा प्रकट की गई थी...

बांके बिहारी मंदिर के रहस्य

दुनियाभर में भगवान कृष्ण के बहुत सारे मंदिर हैं, लेकिन इन मंदिरों में बांके बिहारी मंदिर की विशेष मान्यता और लोकप्रियता है। उत्तर प्रदेश के वृंदावन में स्थित बांके बिहारी मंदिर को लेकर कई मान्यताएं हैं, जिनके चलते इस मंदिर की प्रसिद्धि अलग ही है। बांके बिहारी मंदिर कई चमत्कारों से भरा हुआ है और शायद इसी वजह से देश-विदेश से लोग यहां दर्शन करते आते हैं। बांके बिहारी मंदिर में जो भगवान कृष्ण की मूर्ति विराजमान हैं, वह बेहद चमत्कारी मानी गई है। आइए जानते हैं बांके बिहारी मंदिर से जुड़ीं कुछ रोचक बातें।

- बांके बिहारी मंदिर में विराजमान बांके बिहारी जी की मूर्ति भगवान कृष्ण का एक रूप है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, यह मूर्ति स्वामी हरिदास द्वारा प्रकट की गई थी और इसे पुरुष और स्त्री शक्तियों का एक ही रूप माना जाता है। इस मूर्ति की एक खास बात इसकी त्रिभंग मुद्रा है, जिसमें कृष्ण का एक पैर दूसरे पर टिका होता है और उनके हाथ में बांसुरी नहीं होती है।

- **बांके बिहारी की दिव्य मूर्ति**-बांके बिहारी मंदिर की मूर्ति में श्री कृष्ण और राधा का मिला-जुला रूप समाहित है, जिसे बहुत दिव्य माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि 18वीं शताब्दी में स्वामी हरिदास को दर्शन देने के बाद श्रीकृष्ण और राधा ने एक साथ एक मूर्ति में विलीन होकर उन्हें दर्शन दिए थे। त्रिभंग मुद्रा में खड़ी यह मूर्ति अपने आप में एक रहस्य है, क्योंकि इसमें भगवान के सांसारिक रूप को दर्शाया गया है।
- **पर्दे का रहस्य**-बांके बिहारी मंदिर में बिहारी जी की मूर्ति पर बार-बार पर्दा लगाया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, अगर भक्तों की नजरें लगातार भगवान पर पड़ीं, तो वे उनके सम्मोहन में आ जाएंगे और उनकी दुनिया में खो जाएंगे। इसी वजह से बांके बिहारी जी के पर्दे को बार-बार खोला और बंद किया जाता है। यह प्रथा सदियों पुरानी है और इसका उद्देश्य भगवान के दर्शन को कुछ समय के लिए ही सीमित करना है।
- **निधिवन से स्थानांतरण**-बांके बिहारी जी मूर्ति की पूजा पहले निधिवन में की जाती थी। फिर 19वीं शताब्दी में, स्वामी हरिदास के अनुयायियों और गोस्वामी के बीच विवाद के बाद मूर्ति को वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया था। बांके बिहारी जी के नए मंदिर का निर्माण गोस्वामी के प्रयासों से हुआ था।
- **खजाने का रहस्य**-बांके बिहारी मंदिर का खजाना पिछले 54 सालों से बंद था। हाल ही में 54 साल बाद बांके बिहारी मंदिर के खजाने के डिब्बे खोले गए, जिसमें रत्न और आभूषणों की जगह कुछ बक्से, बर्तन और पीतल के बर्तन मिले। इसके अलावा, इस खजाने में दो सांप और गुप्त सीढ़ियां भी मिलीं, जिससे लोगों की उत्सुकता और बढ़ गई।
- **बांके बिहारी में घंटी**-बांके बिहारी मंदिर में एक भी घंटी नहीं है और इसकी वजह है श्रीकृष्ण की प्रतिमा का बालस्वरूप. दरअसल, इस मंदिर में भगवान कृष्ण बाल स्वरूप में हैं और घंटियों की तेज आवाज से वे चौंक या परेशान हो सकते हैं जैसे कोई बच्चा तेज आवाज से डर जाता है। भक्तों का मानना है कि इससे लड्डू गोपाल की नींद खराब हो सकती है, इसलिए उन्हें परेशानी से बचाने के लिए मंदिर में कोई घंटी नहीं है।
- **बांके बिहारी की बांसुरी**-बांके बिहारी मंदिर में श्रीकृष्ण की मूर्ति के हाथों में बांसुरी नहीं दिखाई देती है। ऐसे में भक्तों के मन में सवाल आता है कि जब भगवान कृष्ण हमेशा बांसुरी लिए रहते हैं, तो इस मूर्ति में बांसुरी क्यों नहीं है। इसे लेकर मान्यता है कि बांके बिहारी के हाथ कोमल हैं और उनके हाथ में बांसुरी देने से चोट लगने का डर रहता है। इसलिए बांके बिहारी के हाथ में बांसुरी नहीं होती है।

■ पं. नित्यानंद

• वास्तु...

बटुआ

वास्तु शास्त्र में बटुआ खाली रखना बहुत अशुभ माना गया है। कहा जाता है कि अगर बटुआ खाली है तो इससे दरिद्रता आती है। बटुए में कम से कम 1 रुपए का सिक्का अवश्य रखना चाहिए ऐसा माना जाता है कि यह गलती जीवन में समृद्धि छीन लेती है इसलिए आपको यह गलती नहीं करनी चाहिए। अगर आप चाहते हैं कि आपका बटुआ खाली न हो, तो हमेशा एक सिक्का लाल कपड़े में लपेटकर रखें। इससे समृद्धि बनी रहती है। यही नहीं, अगर आप पुराने पर्स को फेंक रहे हैं तो भी कुछ बातों का ध्यान देना जरूरी होता है। पुराने पर्स को कभी भी खाली नहीं फेंकना चाहिए। उसमें थोड़े अक्षत यानी चावल जरूर डालें और फिर वही चावल अपने नए पर्स में रख लें। इससे सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। वास्तु शास्त्र के मुताबिक, अगर आपके पास में सिक्का नहीं है तो कुछ चावल के दाने भी पर्स में रख सकते हैं। इससे धन की कमी नहीं आएगी। अक्षत लक्ष्मी जी को पसंद हैं।

• बजरंगबली...

मंगलवार का दिन बजरंगबली को समर्पित माना गया है। यह दिन भगवान हनुमान की कृपा पाने का सबसे शुभ अवसर होता है। इस दिन भक्त संकट मोचन हनुमान जी की विधि विधान से पूजा करते हैं और उनके निमित्त व्रत भी करते हैं। अगर आप भी मंगलवार के दिन हनुमान जी को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो मंगलवार के दिन हनुमान जी की आरती जरूर करें। धार्मिक मान्यता है कि इस आरती को करने से बजरंगबली की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित